पाठ 18. ईद मुबारक

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में तनाव से निपटने का कौशल विकसित करना है ताकि उनमें अपनी तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति समझ पैदा हो सके। त्योहार किसी जाति विशेष या मज़हब से बँधे नहीं होते, इनका उद्देश्य केवल खुशियाँ बाँटना होता है। केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित यह कविता ईद के त्योहार का सुखद वर्णन करती है।

पाठ का सार

कवि कहते हैं कि सभी मनुष्य एकजुट होकर रहें तथा कमल की तरह खिलकर खुशियाँ बाँटें। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी को ईद मुबारक हो। दुखों के समुद्र में भी प्यार की नाव चलाएँ तथा दूसरों के सुख-दुख बाँटें। आज़ादी के उन दीवानों को, जिनके तेज से आज भी दुनिया जगमगा रही है, ईद मुबारक हो। सूरज तथा चाँद की तरह जगमगाने वाली, लोगों के दिलों में मानवता की रोशनी भरने वाली यह मीठी-मीठी ईद सबको मुबारक हो।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कविता प्रारंभ करने से पहले त्योहारों की हमारे जीवन में भूमिका पर चर्चा करें। ईद के विषय में जानकारी चित्रसहित बच्चों से साझा करें। उसके बाद कविता का आदर्श व अनुकरण वाचन करवाएँ। इस कविता का छंद-विधान मुक्त है किंतु यह लययुक्त है इसलिए इसका पठन लय के साथ किया जाना श्रेयस्कर रहेगा। कविता के एक-एक अंश के शब्दार्थ व सरलीकरण अभिप्रायसहित स्पष्ट करते जाएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 40** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - द्वंदव समास की परिभाषा के साथ-साथ शब्द-प्रयोगों के उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट करें। दोनों पद प्रधान होने की स्थिति पर विस्तार से बात करें। इसके लिए कुछ अन्य उदाहरण जैसे–दाल-भात, माता-पिता, यहाँ-वहाँ इत्यादि दिए जा सकते हैं। समास में पूर्व पद (पहला पद) व उत्तर पद (दूसरा पद) की पहचान कैसे करें, यह समझाएँ।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - कविता पूरी करने का अभ्यास कक्षा में श्यामपट्ट की सहायता से सहभागिता के माध्यम से करवाया जाए।
  - ईद के अवसर पर इस रचना को कक्षा में उचित स्थान पर लगाया जाए।
  - आजकल 'होली मिलन', 'ईद मिलन', आदि का आयोजन कई जगहों पर किया जाता है। ऐसे आयोजनों की चर्चा अवश्य करें। इस बात पर बल दें कि त्योहारों का केंद्रिक बिंदु हमेशा खुशी बाँटना रहता है जिसका संबंध हमारे अंतर्मन से होता है। और, हमारा अंतर्मन किसी धार्मिकता के बंधन में बँधा नहीं होता है।